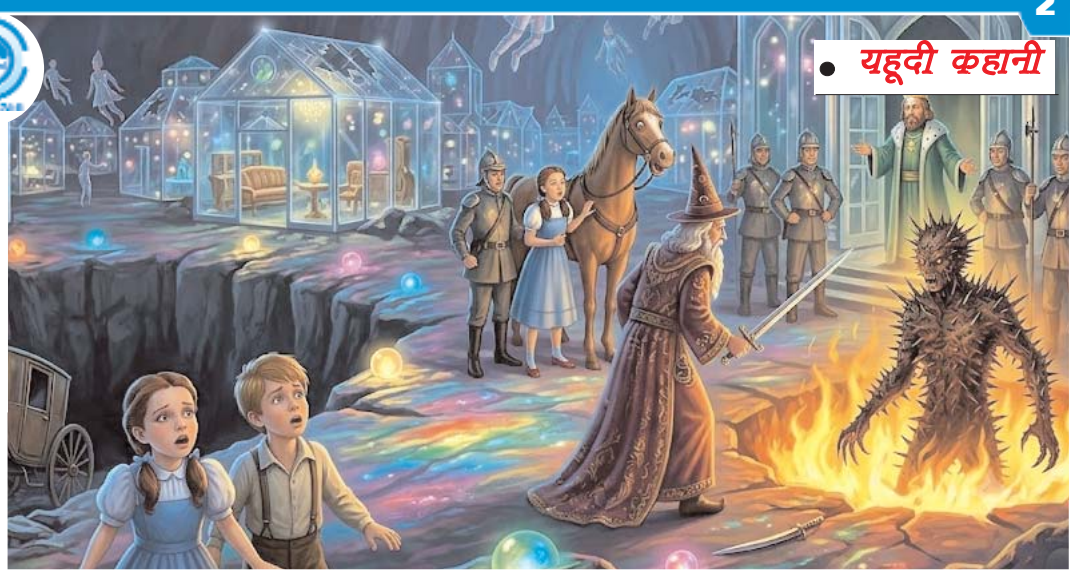


चुनमुन



यहूदी कहानी

कविताएं...

अब यह चिड़िया कहां रहेगी



आंधी आई जोर शोर से,
डालें टूटी हैं झंकोर से।
उड़ा घोंसला अंडे फूटे,
किससे दुख की बात कहेगी!
अब यह चिड़िया कहां रहेगी?
हमने खोला आलमारी को,
बुला रहे हैं बेचारी को।
पर वो चीं-चीं कराती है
घर में तो वो नहीं रहेगी!
घर में पेड़ कहां से लाएं,
कैसे यह घोंसला बनाएं!
कैसे फूटे अंडे जोड़े,
किससे यह सब बात कहेगी!
अब यह चिड़िया कहां रहेगी?

■ महादेवी वर्मा

अगर

अगर उन्हें आवाज मिले तो
क्या बोलेंगे फूल,
सबसे पहले वह बोलेंगे
हमें तोड़ना भूल।
अगर उन्हें उड़ना आ जाता
कांटा क्या कर पाते,
मधुमक्खी सा डंक चुभोकर
सबको मजा चखाते।
अगर भागना उनको आता
पौधे थे कर जाते,
आता हुआ देख दुश्मन को
झट से रस लगाते।

■ अरविंद बख्शी

चुटकुले...



पप्पू : डॉक्टर साहब, मुझे एक समस्या है, मैं जो भी भूल जाता हूं।
डॉक्टर : यह बीमारी आपको कब से है?
पप्पू : कौन सी बीमारी?

पति : (रोते हुए) मुझे तुम्हारी मां ने बहुत मारा...
पत्नी : लेकिन उन्होंने क्यों मारा?
पति : मैंने सिर्फ इतना ही तो पूछा था कि 'आपकी बेटी को वापस लेने कब आ रही हैं?'

शिक्षक : पप्पू, बताओ 'किस्मत' किसे कहते हैं?
पप्पू : सर, परीक्षा के समय जब बगल में बैठ टॉपर अपनी उत्तर-पुस्तिका पन्ने पलट-पलटकर लिखे और हमारी नजर उस पर पड़ जाए, वही किस्मत है!

जानकारी...

सबसे ज्यादा छुट्टियां

दुनिया के तमाम देशों में काम करने वाले नौकरीपेशा लोगों और आम नागरिकों के लिए सार्वजनिक छुट्टियां बेहद मायने रखती हैं। हर देश में छुट्टियों की संख्या वहां के राष्ट्रीय इतिहास, सांस्कृतिक परंपराओं और धार्मिक मान्यताओं के आधार पर तय की जाती है। जहां कुछ देश अपने नागरिकों को साल में ढेरों छुट्टियों का तोहफा देते हैं, वहीं कई देशों में छुट्टियों का दायरा बहुत सीमित रखा जाता है। वैश्विक स्तर पर हुए एक नए अध्ययन से यह साफ हुआ है कि सबसे ज्यादा सरकारी अवकाश देने के मामले में भारत दुनिया में पहले पायदान पर है। आइए जानते हैं कि दुनिया भर में छुट्टियों की यह सूची कैसे तैयार होती है और किस देश का कौन सा स्थान है। दुनिया भर के देशों में मिलने वाली सरकारी छुट्टियों के आंकड़ों पर नजर डालें तो भारत इस सूची में सबसे शीर्ष पर नजर आता है। भारत में राष्ट्रीय पर्वों, राजपत्रित यानी गजटेट छुट्टियों, वैकल्पिक अवकाशों और विभिन्न धार्मिक तथा क्षेत्रीय पर्वों को मिला दिया जाए तो साल भर में कुल छुट्टियों का आंकड़ा 42 तक पहुंच जाता है। इतनी बड़ी संख्या में अवकाश भारत की अनूठी सांस्कृतिक विविधता, बहुधार्मिक ताने-बाने और अनेकता में एकता की अनूठी पहचान को स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं।

► पड़ोसी देश नेपाल दूसरे स्थान पर

भारत के पड़ोसी मुलुक नेपाल का नाम इस सूची में दूसरे स्थान पर आता है, जहां नागरिकों को एक साल में करीब 35 सार्वजनिक छुट्टियां मिलती हैं। नेपाल के वार्षिक कैलेंडर में भी हिंदू और बौद्ध धर्म से जुड़े त्योहारों का बहुत बड़ा योगदान है। यहां दशैं और तिहार जैसे प्रमुख सांस्कृतिक पर्वों के दौरान लगातार कई दिनों तक अवकाश रहता है। नेपाल सरकार अपने सांस्कृतिक रीति-रिवाजों और लोक-परंपराओं को सहेजने के मकसद से इन लंबी छुट्टियों का प्रावधान अपने नागरिकों के लिए रखती है।

► ईरान और म्यांमार की छुट्टियों का गणित

वैश्विक आंकड़ों में तीसरे स्थान पर संयुक्त रूप से दो देशों का नाम दर्ज है, जिनमें ईरान और म्यांमार शामिल हैं। इन दोनों ही देशों में साल भर में 26-26 सरकारी छुट्टियां दी जाती हैं। ईरान में मिलने वाले अधिकांश अवकाश इस्लामिक कैलेंडर और वहां के पारंपरिक नए साल नवरोज के बड़े आयोजनों पर आधारित होते हैं। वहीं दूसरी तरफ, म्यांमार में छुट्टियों का एक बड़ा हिस्सा बौद्ध धर्म के धार्मिक उत्सवों और थिंग्यांन यानी उनके पारंपरिक नव वर्ष जल महोत्सव से जुड़ा हुआ होता है।

► किन देशों में मिलती हैं सबसे कम छुट्टियां?

अधिक छुट्टियों वाले देशों के ठीक विपरीत दुनिया में कई ऐसे विकसित और विकासशील देश भी हैं जहां छुट्टियां नाममात्र की होती हैं। उदाहरण के तौर पर ब्रिटेन में साल भर में महज 10 सार्वजनिक छुट्टियां मिलती हैं। नीदरलैंड और सर्बिया जैसे यूरोपीय देशों में यह आंकड़ा घटकर केवल 9 रह जाता है। वहीं मेक्सिको में एक साल में सिर्फ 8 छुट्टियां दी जाती हैं, जबकि वियतनाम दुनिया में सबसे कम यानी केवल 6 सरकारी अवकाशों के साथ इस सूची के सबसे निचले पायदान पर है।

रोचक...

सबसे ठंडा गांव



रूस के साइबेरिया में स्थित एक दूर-दराज गांव, ओइम्याकॉन में रोजमर्रा की जिंदगी ऐसी ही है। इस धरती का सबसे ठंडा गांव माना जाता है। इतने मुश्किल हालातों के बावजूद भी यहां लगभग 500 लोग रहते हैं। उनकी रोजमर्रा की जिंदगी ठंड के हिसाब से ढल गई है, ओइम्याकॉन में सर्दियां काफी कड़ाके की होती हैं और औसत तापमान -50 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रहता है। यहां का तापमान -71.2 डिग्री सेल्सियस तक भी रिकॉर्ड किया गया है। यह इसे इंसानों के रहने वाली जगहों में सबसे कम तापमान वाली जगहों में से एक बनाता है। इतने कम तापमान में आम काम करना भी मुश्किल हो जाता है। खुली त्वचा पर फ्रॉस्टबाइट का गंभीर खतरा हो सकता है और सांस लेने पर चेहरे के आसपास की नमी भी जम सकती है। यहां फसल उगाना काफी ज्यादा मुश्किल है क्योंकि जमीन साल के ज्यादातर समय जमी रहती है। इस वजह से यहां के लोग पारंपरिक रूप से जानवरों से मिलने वाले खाने पर काफी ज्यादा निर्भर रहते हैं।

एकाएक डोरोथी ने चिड़ियों की

चहचहाहट सुनी।

वह इधर-उधर

देखने लगी, पर

एक भी चिड़िया

नजर नहीं आई।

आश्चर्य में डूबे वे

चलते रहे। तभी

डोरोथी की बिल्ली

ने वहाँ उगे एक

फल को खा

लिया। वह

अदृश्य हो गई।

हैरान-परेशान

डोरोथी और

उसके साथी वहाँ

के एक मकान में

घुसे तो आवाज

आई, आपका

स्वागत है!

डोरोथी ने पूछा,

'आप लोग कौन

हैं? सामने क्यों

नहीं आते?'

जवाब मिला,

'इसकी भी एक

दुःख भरी

कहानी है...

परीलोक से वापसी

गतांक से आगे...

कुछ समय तक वे तीनों उस गुफा में चुप खड़े

रहे। फिर जादूगर ने अपनी जादुई लालटेन

जला ली। उसके प्रकाश में एक रास्ता

दिखाई दिया। पता नहीं, वह कहाँ जाता था!

वे घंटों चलते रहे। फिर गुफा से बाहर निकल

आए। काफी नीचे उन्हें एक गहरी घाटी दिखाई

दी। धीरे-धीरे वे तीनों उस घाटी में उतर गए।

एकाएक डोरोथी ने चिड़ियों की चहचहाहट सुनी।

वह इधर-उधर देखने लगी, पर एक भी चिड़िया

नजर नहीं आई। आश्चर्य में डूबे वे चलते रहे।

तभी डोरोथी की बिल्ली ने वहाँ उगे एक फल को

खा लिया। वह अदृश्य हो गई।

हैरान-परेशान डोरोथी और उसके साथी वहाँ

के एक मकान में घुसे तो

आवाज आई, आपका

स्वागत है!

डोरोथी ने पूछा, 'आप लोग कौन हैं? सामने क्यों

नहीं आते?'

जवाब मिला, 'इसकी भी एक दुःख भरी कहानी है।

डोरोथी ने पूछा, 'आप लोग कौन हैं? सामने क्यों

नहीं आते?'

जवाब मिला, 'इसकी भी एक दुःख भरी कहानी है।

डोरोथी ने पूछा, 'आप लोग कौन हैं? सामने क्यों

नहीं आते?'

जवाब मिला, 'इसकी भी एक दुःख भरी कहानी है।

डोरोथी ने पूछा, 'आप लोग कौन हैं? सामने क्यों

नहीं आते?'

जवाब मिला, 'इसकी भी एक दुःख भरी कहानी है।

डोरोथी ने पूछा, 'आप लोग कौन हैं? सामने क्यों

नहीं आते?'

जवाब मिला, 'इसकी भी एक दुःख भरी कहानी है।

डोरोथी ने पूछा, 'आप लोग कौन हैं? सामने क्यों

नहीं आते?'

जवाब मिला, 'इसकी भी एक दुःख भरी कहानी है।

डोरोथी ने पूछा, 'आप लोग कौन हैं? सामने क्यों

नहीं आते?'

जवाब मिला, 'इसकी भी एक दुःख भरी कहानी है।

डोरोथी ने पूछा, 'आप लोग कौन हैं? सामने क्यों

नहीं आते?'

नहीं देख पा रहे हैं।'

‘शायद मेरी बिल्ली ने भी वही फल खा लिया

है।’ डोरोथी बोली। फिर उसने कहा, ‘हमें यहाँ से

तुरंत चल देना चाहिए। यह अच्छी जगह नहीं।’

अदृश्य स्वर ने फिर कहा, ‘इस घर के बाहर

तिकोने पत्तों का एक पौधा है। उसका रस आप

सब अपने तलवों पर मल लें तो पानी पर चल

सकेंगे। वरना भालुओं से आपका बचना मुश्किल

होगा। भालू पानी पर नहीं चल सकते।’

डोरोथी, जैब व ऊज के जादूगर ने वैसा ही

किया। फिर वे घाटी से बाहर जाने वाले रास्ते पर

चल दिए। एकाएक पीछे से उन्हें भालुओं की

आवाज सुनाई दी। सब भागकर नदी में कूद पड़े

और दूसरी ओर जा पहुँचे।

आगे पहाड़ के पार, गुरगल या लकड़ी मानवों

का देश था। वहाँ लकड़ी के पुतले रहते थे। वे

लकड़ी के पंखों की सहायता से उड़ा करते थे।

वहाँ हर चीज लकड़ी की ही

थी। मकान, सड़कें, पशु,

पक्षी सब सब गूँगे थे वहाँ।

लकड़ी मानव आपस में

इशारों से बातें करते थे। वहाँ

पहुँचते ही नई मुसीबत आई।

लकड़ी मानवों ने उन सबको

घेर लिया। जैब अपनी

पिस्तौल से

गोलियाँ चलाने लगा, लेकिन लकड़ी मानवों पर

गोलियाँ भला क्या असर करतीं। वे लकड़ी में

धँसकर रह गई। आखिर लकड़ी मानव सबको

पकड़कर ले गए और उन्हें एक बहुत बड़े मकान

में बंद कर दिया।

-जारी

कान में सीटी...

जमीन के स्तर पर कान के परदे के अंदर

और बाहर हवा का दबाव आमतौर पर

संतुलित रहता है। जैसे-जैसे आप ऊपर जाते हैं बाहर का हवा

का दबाव कम होता जाता है। तेजी से ऊपर उठने के दौरान

कुछ समय के लिए कान के बीच के हिस्से का दबाव आस-

पास के दबाव से ज्यादा हो सकता है। इससे दबाव का एक

असहज असंतुलन पैदा होता है। दबाव में बदलाव और कान

के परदे की हलचल से चटकने, क्लिक करने या फिर सिटी

जैसी आवाज सुनाई दे सकती है। कुछ मामलों में लोगों को

कुछ समय के लिए टिनटिस जैसा अनुभव भी हो सकता है।

